



Review Article

स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी कवियों का योगदान

डॉ. सुजाता मगदुम

प्राचार्या तथा हिन्दी सह-प्राध्यापिका, सरकारी पदवी महाविद्यालय, सदलगा, कर्नाटक, भारत

Corresponding Author: * डॉ. सुजाता मगदुम

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23103460>

सारांश

प्रस्तुत आलेख भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी कवियों के योगदान का विवेचन करता है। लेखिका के अनुसार स्वाधीनता-प्राप्ति का श्रेय केवल स्वतंत्रता सेनानियों को ही नहीं, अपितु उस युग के कवियों को भी दिया जाना चाहिए, जिन्होंने अपनी ओजस्वी रचनाओं के माध्यम से जनमानस में क्रांति, राष्ट्रप्रेम और बलिदान की भावना जगाई। आलेख में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर द्विवेदी युग तथा छायावाद युग तक के कवियों—मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्याम नारायण पांडेय, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर तथा बंकिमचंद्र चटर्जी आदि की प्रतिनिधि रचनाओं के उद्धरण सहित यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार इन कवियों ने अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों का विरोध कर जनता को आंदोलन हेतु प्रेरित किया। साथ ही मुंशी प्रेमचंद के गद्य-योगदान तथा कन्नड़, मराठी, तमिल, बंगला आदि भारतीय भाषाओं के कवियों-साहित्यकारों की समानांतर भूमिका का भी उल्लेख किया गया है। निष्कर्षतः आलेख यह प्रतिपादित करता है कि इन कवियों की निर्भीक लेखनी ने न केवल स्वाधीनता संग्राम को नई ऊर्जा दी, बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को भी समृद्ध कर राष्ट्रप्रेम की एक स्थायी परंपरा स्थापित की, जिसे जीवित रखना वर्तमान साहित्यकारों का दायित्व है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 12-11-2024
- Accepted: 25-12-2024
- Published: 30-12-2024
- IJCRM:3(6) 2024: 322-325
- ©2024(All Rights Reserved)
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

मगदुम सु. स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी कवियों का योगदान. Int J Contemp Res Multidiscip. 2024(3(6):322-325.

मुख्य शब्द: स्वतंत्रता संग्राम, संघर्ष, बलिदान, योगदान, क्रांतिकारी, आंदोलन, आधुनिक युग, परतंत्रता, इतिहास, समाज, कविता, साहित्यकार, भूमिका, राष्ट्रप्रेम।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जितना चित्रण ऐतिहासिक पुस्तकों में प्राप्त है उसका एक सशक्त पहलू तदयुगीन कविताओं में भी चित्रित है। स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेय स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ उस युग के कवियों को भी देना चाहिए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी कवियों ने अपनी ओजस्वी रचनाओं के माध्यम से देशवासियों में क्रांति, राष्ट्रप्रेम और बलिदान की अमर ज्योति जलाई। उनकी कविताओं ने जनता को एकजुट किया और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध जन-आंदोलन खड़ा करने में सबसे शक्तिशाली हथियार की भूमिका निभाई। भारतीय आज़ादी के उथल-पुथल तथा संघर्ष को हिन्दी कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाकर दोहरे दायित्व का निर्वाह किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का युग वह युग है जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक

शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों और कवियों ने अपने शब्दों से जोश भरा।

उपन्यास और कहानी के अलावा कवियों ने अपनी कविता से लोगों में देशप्रेम की ऐसी अलख जगाई कि लोग घरों से बाहर निकल आए और क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया है। भारत में स्वाधीनता संग्राम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि हमारी परतंत्रता का इतिहास। यह देश 1,000 वर्ष से भी अधिक समय तक गुलाम रहा,

परंतु इसका सांस्कृतिक स्वरूप अधुण बना रहा। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक एकता रही है।
मोहम्मद इकबाल लिखते हैं

**कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर जहां हमारा' 1**

इस शेर के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति में कोई ऐसी अनूठी और दिव्य बात है, जिसके कारण तमाम बाहरी हमलों और सदियों के विपरीत समय के बावजूद हमारा अस्तित्व आज भी अटूट है। उर इसके माध्यम से दुश्मनों तक यह संदेश पहुँचाना चाहते हैं कि भारतीयों के अस्तित्व को मिटाने का उअना प्रयास व्यर्थ है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़ें स्वाधीनता आंदोलन में ही थीं। वे तथा उनके मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वाधीनता संग्राम और स्वतंत्रता सेनानियों की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए **भारतेंदु** ने लिखा है:-

**'भीतर भीतर सब रस चुसै, हंसी हंसी के तन मन धन मुसै।
जाहिर बातिन में अति तेज, क्यों सखि साजन, न सखि अंगरेज।' 2**

इस मुकरी में एक सखी दूसरी सखी से पूछती है कि वह कौन है जो मीठी-मीठी बातों और हंसी-खुशी में लोगों का सब कुछ (तन, मन, धन) लूट लेता है और बातों में बहुत चालाक है — क्या वह तुम्हारा कोई सज्जन/पति है? तो दूसरी सखी जवाब देती है — "ना सखि, अंग्रेज"। भारतेंदु जी ने इन पंक्तियों के जरिए उस दौर की सच्चाई को उजागर किया था जहाँ अंग्रेज सरकार सीधे तौर पर जुल्म करने के बजाय मीठी-मीठी नीतियों, झूठे वादों और व्यापार के बहाने भारतीयों का आर्थिक और मानसिक शोषण कर रही थी।

द्विवेदी युग के साहित्यकार, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए।

**हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी।' 3**

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' में उन्होंने लिखा-
**'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।' 4**

मैथिलीशरण गुप्त के अलावा **सुभद्रा कुमारी चौहान** की 'झाँसी की रानी' कविता ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया:-

**बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।' 5**

पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा:-

**'रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।' 6**

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' लिखा। सुभद्रा कुमारी चौहान की '**झाँसी की रानी**' कविता ने अंग्रेजों की चूल्हें हिलाकर रख दीं। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है:-

**'सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।' 7**

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित यह प्रसिद्ध वीर रस की कविता 1857 के स्वतंत्रता संग्राम और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साहस का वर्णन करती है। यह कविता देशवासियों में स्वतंत्रता की अलख जगाने और अंग्रेजों के खिलाफ रानी की वीरता को रेखांकित करने वाली अमर गाथा है।

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' निराला ने 'भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।' कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए।' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' तो **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'** ने 'विप्लव गान' में लिखा:-

**कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए
नाशा! नाशा! हां महानाशा!!! की
प्रलयकारी आंख खुल जाए।' 8**

कहकर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर

पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही **बंकिमचंद्र चटर्जी** का देशप्रेम से ओत-प्रोत 'वंदे मातरम्' गीत:-

वंदे मातरम्!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम्! वंदे मातरम्!
शुभ्र ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्! वंदे मातरम्! 9

यह एक ऐसी कविता थी जिससे कवि माखनलाल चतुर्वेदी अत्यंत प्रेरित हुए और उन्होंने आजादी की बलिवेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा दिखाते हुए 'पुष्प की अभिलाषा' कविता लिखी। इसी तरह जंगे आजादी में अपनी रचनाओं के माध्यम से विशेष भूमिका निभाने वाले साहित्यकारों की एक लंबी फेहरिस्त है।

'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं मैं गुथू अलकों में विंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के द्वार पर हे हरि! डाला जाऊं!
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं, भाग्य पर इतराऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक' 10

इसी प्रकार राधाकृष्ण दास, बद्रीनारायण चौधरी, प्रताप नारायण मिश्रा, पंडित अंबिका दत्त व्यास, बाबू रामकिशन वर्मा, ठाकुर जगमोहन सिंह, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे प्रबुद्ध रचनाकारों ने राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की ऐसी गंगा बहाई जिसके तीव्र वेग से जहां विदेशी हुक्मरानों की नींव हिलने लगी, वहीं नौजवानों के अंतस में अपनी पवित्र मातृभूमि के प्यार का जज्बा गहराता चला गया। एक ओर बंकिमचंद्र चटर्जी ने आनंद मठ व वंदे मातरम् जैसी कालजयी रचनाओं का सृजन किया, तो कविवर **जयशंकर प्रसाद** की कलम भी बोल उठी-

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।' 11

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी निभाने में पीछे नहीं रहे और मृतप्रायः भारतीय जनमानस में भी उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिए एक नई ताकत व एक नई ऊर्जा का संचार किया। प्रेमचंद की कहानियों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक तीव्र विरोध तो दिखा ही, इसके अलावा दबी-कुचली शोषित व अफसरशाही के बोझ से दबी जनता के मन में कर्तव्य-बोध का एक ऐसा बीज अंकुरित हुआ जिसने सबको आंदोलित कर दिया।

कविवर **रामधारी सिंह दिनकर** भी कहां खामोश रहने वाले थे। मातृभूमि के लिए हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग करने वाले बहादुर वीरों व रणबाँकुरों की शान में उन्होंने कहा:-

'कमल आज उनकी जय बोल जला अस्थियां बारी-बारी
छिटकाई जिसने चिंगारी जो चढ़ गए पुण्य-वेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल।' 12

हिन्दी के अलावा कन्नड के कुवेंपु, बेन्द्रे, गोवेंद पै, डी.वी.जी, मराठी के विनायक दामोदर सावरकर, कुसुमाग्रज, साने गुरुजी. कवी गोविंद, तमिल के सुब्रह्मण्यम भारती, नमकल कवि रामलिंगम पिल्लई, भारतदासन, बंगला के रबींद्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, द्विजेन्द्रलाल राय, अन्य भाषाओं के माइकेल मधुसूदन, नर्मद, चिपलुन ठाकर आदि कवियों व साहित्यकारों ने राष्ट्रप्रेम की भावनाएं जागृत कीं और जनमानस को आंदोलित किया।

उपसंहार

स्वतंत्रता संग्राम में तद्व्युगीन राजनेताओं के साथ-साथ साहित्यकारों, कवियों, वकीलों और छात्रों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। उस युग के कवियों ने 'वंदे मातरम्', "सारे जहां से अच्छा" जैसी महान और अमर रचनाओं से न केवल आजादी की लड़ाई में नई जान फूँकी बल्कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को मजबूती देते हुए नए आयाम प्रदान किए, नयी दिशा प्रदान की। इन कवियों की लेखनी इतनी प्रभावशाली थी कि ब्रिटिश सरकार ने कई कवियों को जेल में डाल दिया और उनकी राष्ट्र-विरोधी पुस्तकों को प्रतिबंधित कर दिया। परन्तु, उनकी कविताओं ने जन-जन को इतना निर्भीक बना दिया कि अंततः देश 1947 में स्वतंत्र हो सका।

आज के युग के कवियों और साहित्यकारों का यह दायित्व बनता है कि उनका चिंतन देश के हित में हो तथा राष्ट्र-प्रेम की परंपरा को जीवित रखें, जिसकी नींव मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, नीरज जैसे दिग्गज साहित्यकारों ने राखी थी।

संदर्भ सूची

1. इकबाल। सारे जहाँ से अच्छा। उद्धृत कविता।
2. भारतेन्दु कविता कोश।
3. गुप्त मैथिलीशरण। भारत-भारती।
4. वही।
5. चौहान सुभद्रा कुमारी। झाँसी की रानी।
6. पांडेय श्याम नारायण। चेतक।
7. चौहान सुभद्रा कुमारी। झाँसी की रानी।
8. शर्मा नवीन बालकृष्ण। विप्लव गान।
9. चटर्जी बंकिमचंद्र। वंदे मातरम्।
10. चतुर्वेदी माखनलाल। पुष्प की अभिलाषा।
11. प्रसाद जयशंकर। चन्द्रगुप्त।
12. दिनकर रामधारी सिंह। कमल, आज उनकी जय बोल।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.